Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में राजनीति और स्त्री का अंर्तसम्बन्ध

डॉ. आशा अग्रवाल* बन्दना कुमारी**

*** प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत**

**** शोधार्थी (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत**

प्रस्तावना – चित्रा जी एक संवेदनशील एवं युग-द्रष्टा साहित्यकार है। उनकी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। चित्रा जी ने अपने उपन्यासों में स्त्री जीवन के विविध पक्षों का चित्रण किया है। उन्होंने स्त्री पर राजनीति के प्रभाव के साथ-साथ राजनीति में स्त्रियों के उपयोग को अपने उपन्यासों में दर्शाया है। हमारे देश की स्वतंत्रता के बाद स्त्रियों की राजनीतिक स्थिति में अच्छे बदलाव आए हैं। कई प्रकार के अधिनियम बनाए गए हैं, जिससे उनकी स्थिति बेहतर हो सके। हमारे देश में अनेक स्त्रियों ने राजनीति में अपनी पहचान बनाई है। चित्रा जी ने अपने उपन्यासों में ऐसे स्त्री पात्रों की रचना की है, जो बदलाव लाने की ताकत बनकर राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके साथ उन्होंने कुछ ऐसी स्त्री-पात्रों की भी रचना की है, जिनका उपयोग नेता अपने राजनीतिक दल के लिए करते हैं। इस प्रकरण में उनका शोषण भी होता है।

'आवां' उपन्यास में 'श्रमजीवा' नामक संगठन में निर्धन एवं बेरोजगार महिलाओं को रोजगार दिया जाता है। वहाँ मजदूर महिलाएँ पापड़ बेलने का काम करती हैं। इस संस्था की संचालिका शाहबेन है जिन्होंने महात्मा गाँधी के आदेशानुसार श्रमजीवा संस्था का संचालन शुरू किया। शाहबेन ऊपर से सख्त परन्तु अंदर से नर्म दिल स्त्री है। श्रमजीवा में काम करने वालों के सुख-दु:ख को समझाती हैं। वे बुरे वक्त में उनकी सहायता भी करती हैं। शाहबेन अगर चाहती तो अपने स्वार्थ को प्राथमिकता देकर राजनीति में अपनी पहचान बना सकती थी। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। वे स्त्रियों के प्रति करूणा एवं सहानुभूति रखती है।

इसके विपरीत इस उपन्यास में एक 'जागो री' नामक संस्था है। यह संस्था 'कामगर अधाड़ी' का ही एक हिस्सा है। 'जागो री' की संचालिका विमला बेन है। यह संस्था देह-व्यापार करने वाली स्त्रियों के उत्थान के लिए काम करती है। वैश्याओं के देह-व्यापार के धंधे से मुक्त कराना इस संस्था का उद्देश्य है। इस संस्था की तरफ से वैश्याओं को जय हिंद मिल में नौकरी दिलवाई जाती है। परन्तु वहाँ के मजदूर उन्हें सिर्फ एक देह के तौर पर देखते हैं। उन पर कुदृष्टि डालते हैं। इस कारण वे नौकरी छोड़ देती है। अनीसा भी एक वश्या है, जिसके साथ उसका ग्राहक किरपू दुसाध बलात्कार करता है। जिससे उसके गर्भ में पल रहे सात महीने के बच्चे के साथ अनीसा की भी मौत हो जाती है। अनीसा के साथ हुए इस अमानवीय कृत्य के कारण 'जागो री' संस्था की सभी वैश्या सदस्याएँ धंधा बंद कर धरने पर बैठ जाती हैं, जिसमें विमला बेन उनका साथ देती है। विमला बेन विधानसभा में इस प्रश्न को उठा कर हंगामा खड़ा कर देती है। परन्तु विमला बेन यह अपनी राजनीति चमकाने, चुनाव जीतने और वोट बटोरने के लिए करती हैं। 'किरपू दुसाध' की पत्नी का कहना है 'धरने पर बैठी हरामजादी रंडिया जिनके हकसाए हुसक रही, ऐसी बैडम-बैली नहीं मैं कि उनकी पोल-पट्टी न सूंघ पाऊं, पवार बाबू ! बुढ़िया विमला बेन को तो अपने वोट बटोरने से मतलब – डाकू – हत्यारों से मिले या रंडी-भड़वों से। उनको क्या फरक पड़ता है।'[1]

चित्रा जी ने 'आवां' उपन्यास की भूमिका में अपने छात्र जीवन की दिशा बदलने वाले श्रमिक संगठनों की आपसी प्रतिस्पर्धा अंतर्विरोध तथा अपराधी गिरोह की ठेकेदारी का वर्णन किया है। 'जागरण' संस्था की संचालिका मीरा ताई की हत्या का वर्णन करते हुए वे लिखती हैं 'एक दोपहर भाडुप स्टेशन रोड के भरे बाजार के बीच चार गुंडों ने मिलकर मीरा ताई की देह से उनके कपड़े फाड़े, उन्हें बेइज्जत ही नहीं किया, पीठ पर छुरा भोंक उन्हें अपनी अवमामना की पीड़ा से भी सदैव सदैव के लिए मुक्त कर दिया – हफ्ते-भर तक मैं बिस्तर से नहीं उठ पाई। बस एक ही द्वन्द्व रह-रह कर मेरी कनपटियों में सूजे की नोक-सा उतरने लगता। उन्हें मीरा ताई को मारना था मार देते। भरी सड़क पर उनके कपड़े तार-तारकर उनके स्त्रीत्व को अपमानित करने की क्या जरूरत थी।'[2]

यहाँ राजनीति से जुड़ी स्त्री की स्थिति एवं स्त्री को सिर्फ एक देह के तौर पर देखने वाली समाज की रूढ़ एवं बीमार मानसिकता को दर्शाया गया है।

इसी उपन्यास में 'कामगार अधाड़ी' संस्था के नेता अन्ना साहब अपने मित्र देवीशंकर पांडे के लकवाग्रस्त होने पर उनकी बेटी नमिता को संस्था में काम पर लगा देते हैं। अन्ना साहब को गाँधीवादी सोच का नेता माना जाता है। परन्तु अंदर से वे एक कुत्सित व्यक्ति है, जो अपने मित्र की बेटी नमिता के साथ यौनाचार करते हैं। नमिता उनके इस आचरण से स्तब्ध रह जाती है। वह पसीने-पसीने होने लगती है तो अन्ना साहब कहते हैं 'कैसी बेवकूफी कर रही हो ? जिस देह से फूले आम्र बौर-सी मोदक महक उठनी चाहिए कि बौरा दे जो सामने वाले को – ठंडा पसीना रिस रहा। तुम बस इतना इतना-भर करो। आओ, मेरी जांघ पर आकर बैठ जाओ।'[3]

यहाँ स्त्रियों के प्रति एक नेता तथा सामाजिक, राजनीतिक कार्यकर्ता की अनैतिक, आपत्तिजनक एवं भोगवादी मानसिकता को दर्शाया गया है।

इसी उपन्यास में एक प्रसंग है जहाँ हिंदू युवती सुनंदा एक मुस्लिम युवक सुहैल से प्रेम करती है। उसके बच्चे की माँ बन जाती है। परन्तु उनका प्रेम राजनीति एवं समाज की भेंट चढ़ जाता है। सुनंदा नमिता से कहती है 'गलत सोच रही, दीदी ! धर्माधों के लिए मात्र मैं एक बहाना-भर हूँ। मैं बहाना न रहूँ तो कल वे कोई और बहाना तलाश लेंगे। गढ़ लेंगे। गढ़कर उनमें तेल के पीपे उलीचेंगे। दीदी, जरूरत है, उनकी कलाइयाँ धर लेने की - मजबूती से ताकि वे हाथ न छुड़ा पाएँ। तीली न सुलगा पाएँ। और यह काम अब कोई नहीं सिर्फ स्त्रियाँ कर सकती हैं।'[4]

बाद में सुनंदा की हत्या कर दी जाती है।

'गिलिगडु' उपन्यास में बाबू जसवंत सिंह की नौकरानी सुनगुनियाँ का उपयोग बसपा नेता राम खिलावन यादव अपनी जातिगत राजनीति के लिये करना चाहते हैं। वे सुनगुनियाँ को ब्राह्मण-ठाकुरों के खिलाफ भड़काकर अपनी राजनीतिक रोटी सेंकने का प्रयास करते हैं। परन्तु सुनगुनियाँ उनसे कहती है 'गाँव में उसको बामन-ठाकुरों ने नहीं सताया। सगे-लोगों ने सताया। सगे-लोगों के लिए भी औरत औरत ही ठहरी।'[5]

सुनगुनियाँ नेताजी से स्पष्ट कहती है 'उन्हें न सुहाए तो न सही। उसे शांति से अपने बच्चे पालने दें। उन्हें पार्टी के दफ्तर में काम करना है न गाँव की सरपंचगिरी बजानी है। उनके घर का चौका-टहल जब तक करवाएंगे - करती रहेगी।'[6]

इस प्रकार, चित्रा जी ने अपने उपन्यासों में राजनीति और स्त्री के परस्पर सम्बन्धों के विभिन्न आयामों पर गहराई से विचार करते हुए, उन्हें विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आवां, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-364
2. आवां, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-9
3. आवां, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-136
4. आवां, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-133
5. गिलिगडु, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-83
6. गिलिगडु, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-83

****